International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

Original Article

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और बिहार पर उसका प्रभाव : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. नमिता बाला

अतिथि सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,

अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज कटारी हिल रोड, गया, बिहार

Manuscript ID:
IJAAR-130612
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 6
July – August 2026
Pp. 93 - 101

Submitted: 19 July 2026
Revised: 30 July 2026
Accepted: 1 August 2026
Published: 10 August 2026

Corresponding Author:
डॉ. नमिता बाला

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.21923607

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.21923607

सार:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन आधुनिक भारत के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक ऐतिहासिक प्रक्रियाओं में से एक था। यह केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का संघर्ष नहीं था, बल्कि सामाजिक जागरण, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास का भी एक सशक्त माध्यम था। इस आंदोलन ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों—किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों, महिलाओं तथा बुद्धिजीवियों—को एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य से जोड़ने का कार्य किया। राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीयों में स्वतंत्रता, समानता, न्याय और लोकतंत्र के आदर्शों को स्थापित किया तथा आधुनिक राष्ट्र-निर्माण की आधारशिला रखी।

बिहार ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभाई। चंपारण सत्याग्रह (1917) से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन (1942) तक बिहार राष्ट्रीय संघर्ष का एक प्रमुख केंद्र बना रहा। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चंपारण सत्याग्रह ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की और सत्याग्रह की शक्ति को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया। बिहार के महान नेताओं—डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, मजहरुल हक, स्वामी सहजानंद सरस्वती तथा लोकनायक जयप्रकाश नारायण—ने राष्ट्रीय आंदोलन को वैचारिक एवं संगठनात्मक मजबूती प्रदान की।

प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख चरणों तथा बिहार पर उसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय आंदोलन ने बिहार में राजनीतिक चेतना का विकास किया, सामाजिक सुधार आंदोलनों को गति प्रदान की, किसान एवं श्रमिक वर्ग में जागरूकता उत्पन्न की तथा शिक्षा एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी इस आंदोलन की विरासत बिहार की राजनीतिक संस्कृति, सामाजिक संरचना और विकास प्रक्रिया को निरंतर प्रभावित करती रही है।

मुख्य शब्द: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, बिहार, चंपारण सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रवाद, राजनीतिक चेतना।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

Creative Commons

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. नमिता बाला. (2026). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और बिहार पर उसका प्रभाव : एक समीक्षात्मक अध्ययन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(6), 93 – 101.
https://doi.org/10.5281/zenodo.21923607

प्रस्तावना:

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन अनेक आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का सामना कर रहा था। अंग्रेजों की शोषणकारी आर्थिक नीतियों ने भारतीय कृषि, उद्योग और व्यापार को गंभीर रूप से प्रभावित किया। परंपरागत कुटीर उद्योगों का पतन हुआ, किसानों पर करों का बोझ बढ़ा तथा भारतीय अर्थव्यवस्था विदेशी हितों के अधीन हो गई। इसके अतिरिक्त सामाजिक कुरीतियाँ, अशिक्षा और राजनीतिक अधिकारों का अभाव भारतीय समाज की प्रगति में बाधक थे। ऐसी परिस्थितियों में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ और भारतीय समाज में स्वतंत्रता तथा स्वशासन की भावना धीरे-धीरे मजबूत होने लगी।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना वर्ष 1885 में हुई, जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को संगठित स्वरूप प्रदान किया। प्रारंभिक चरण में कांग्रेस के नेताओं ने संवैधानिक उपायों और शांतिपूर्ण याचिकाओं के माध्यम से भारतीयों के अधिकारों की मांग की। किंतु बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप अधिक व्यापक, जनोन्मुखी और संघर्षशील हो गया। बंग-भंग विरोधी आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन तथा क्रांतिकारी गतिविधियों ने राष्ट्रवाद को नई ऊर्जा प्रदान की। महात्मा गांधी के भारतीय राजनीति में प्रवेश के बाद राष्ट्रीय आंदोलन जनसामान्य से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ गया और स्वतंत्रता संघर्ष एक व्यापक जनआंदोलन के रूप में विकसित हुआ।

बिहार इस राष्ट्रीय जागरण से अछूता नहीं रहा। यहाँ राष्ट्रीय चेतना का विकास सामाजिक सुधार आंदोलनों, शिक्षा के प्रसार, किसान संघर्षों तथा उभरते हुए शिक्षित मध्यवर्ग के माध्यम से हुआ। बिहार के किसानों, विद्यार्थियों और बुद्धिजीवियों ने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की समस्याओं और शोषण के विरुद्ध हुए आंदोलनों ने राष्ट्रीय संघर्ष को जनाधार प्रदान किया।[1]

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान बिहार केवल एक सहभागी प्रदेश नहीं था, बल्कि अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का केंद्र भी रहा। वर्ष 1917 का चंपारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक ऐतिहासिक मोड़ सिद्ध हुआ। नील की खेती से पीड़ित किसानों की समस्याओं को लेकर महात्मा गांधी ने पहली बार भारत में सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया। इस आंदोलन ने न केवल किसानों को न्याय दिलाया, बल्कि भारतीय राजनीति में गांधी युग की शुरुआत भी की।[2]

इसके पश्चात असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में जनसाधारण ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध अभूतपूर्व प्रतिरोध किया। विद्यार्थियों,

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

युवाओं और किसानों ने स्वतंत्रता संघर्ष को नई गति प्रदान की। बिहार के अनेक नेताओं ने राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व करते हुए स्वतंत्रता आंदोलन को सुदृढ़ किया और देश को स्वतंत्रता की दिशा में अग्रसर किया।

वास्तव में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने बिहार के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। इसने लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समानता, राष्ट्रीय एकता तथा जनभागीदारी की भावना को सुदृढ़ किया। यही कारण है कि बिहार का इतिहास भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है और उसके योगदान के बिना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सम्यक् मूल्यांकन संभव नहीं है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का विकास अनेक ऐतिहासिक कारणों का परिणाम था। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार, आधुनिक संचार साधनों के विकास, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों तथा औपनिवेशिक शोषण के अनुभव ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया।

1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का प्रथम व्यापक प्रयास माना जाता है। बिहार में वीर कुंवर सिंह ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया और अंग्रेजी सत्ता को गंभीर चुनौती दी। यद्यपि यह विद्रोह सफल नहीं हो सका, फिर भी इसने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[3]

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक बिहार में शिक्षित वर्ग, पत्रकारिता और सामाजिक संगठनों के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार होने लगा। पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर और गया जैसे नगर राजनीतिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बन गए।

बिहार में राष्ट्रीय चेतना का विकास:

बिहार में राष्ट्रीय चेतना का विकास सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से जुड़ा हुआ था। औपनिवेशिक शासन के दौरान किसानों पर करों का भारी बोझ था। नील की खेती तथा जमींदारी व्यवस्था ने ग्रामीण समाज को गहरे संकट में डाल दिया था।

राजकुमार शुक्ल जैसे किसान नेताओं ने किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय मंच तक पहुँचाया। उनके प्रयासों से महात्मा गांधी चंपारण आए और किसानों की समस्याओं का अध्ययन किया। यह घटना बिहार में राष्ट्रीय चेतना के विकास का महत्वपूर्ण आधार बनी।[4]

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से बिहार में शिक्षा, पत्रकारिता तथा सामाजिक संगठनों का विस्तार हुआ। बिहार विद्यापीठ जैसी संस्थाओं की स्थापना ने राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा दिया और युवाओं में राष्ट्रवादी चेतना विकसित की।

चंपारण सत्याग्रह और बिहार:

वर्ष 1917 का चंपारण सत्याग्रह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक अध्याय माना जाता है। यह केवल किसानों की आर्थिक समस्याओं के समाधान का आंदोलन नहीं था, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनशक्ति, सत्याग्रह और अहिंसात्मक प्रतिरोध की प्रभावशीलता का प्रथम सफल प्रयोग भी था। चंपारण के किसानों को अंग्रेज नीलहे बागान मालिकों द्वारा "तीनकठिया प्रथा" के अंतर्गत अपनी भूमि के एक निश्चित भाग पर

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

अनिवार्य रूप से नील की खेती करने के लिए विवश किया जाता था। इस व्यवस्था के कारण किसानों को भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ती थी, क्योंकि नील की खेती से उन्हें उचित लाभ नहीं मिलता था और उनकी कृषि भूमि की उर्वरता भी प्रभावित होती थी।[5]

राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर महात्मा गांधी चंपारण पहुँचे और वहाँ के किसानों की समस्याओं का प्रत्यक्ष अध्ययन किया। उन्होंने गाँव-गाँव जाकर किसानों के बयान दर्ज किए तथा उनके शोषण के प्रमाण एकत्रित किए। गांधीजी ने सत्य, अहिंसा और शांतिपूर्ण प्रतिरोध के आधार पर संघर्ष का मार्ग अपनाया। ब्रिटिश प्रशासन ने प्रारंभ में उनके कार्यों में बाधा डालने का प्रयास किया, किंतु किसानों के व्यापक समर्थन और जनमत के दबाव के कारण सरकार को झुकना पड़ा। अंततः एक जाँच समिति का गठन किया गया, जिसकी सिफारिशों के आधार पर किसानों की शिकायतों का समाधान किया गया तथा तीनकठिया प्रथा को समाप्त कर दिया गया।[6]

चंपारण सत्याग्रह का महत्व केवल कृषि सुधार तक सीमित नहीं था। इस आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को ग्रामीण आधार प्रदान किया तथा महात्मा गांधी को राष्ट्रीय राजनीति में एक प्रभावशाली नेता के रूप में स्थापित किया। इसके परिणामस्वरूप बिहार के किसानों में आत्मविश्वास, संगठन क्षमता और राजनीतिक जागरूकता का विकास हुआ। साथ ही शिक्षा, स्वच्छता और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी गांधीजी के प्रयासों ने ग्रामीण समाज में सकारात्मक परिवर्तन की नींव रखी। इस प्रकार चंपारण सत्याग्रह ने बिहार को राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी प्रदेशों में स्थापित कर दिया।

असहयोग आंदोलन और बिहार:

महात्मा गांधी द्वारा 1920 में प्रारंभ किया गया असहयोग आंदोलन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का पहला व्यापक जनआंदोलन था। इसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन के साथ सहयोग समाप्त करके स्वराज की प्राप्ति करना था। गांधीजी का विश्वास था कि यदि भारतीय जनता अंग्रेजी शासन की संस्थाओं, वस्तुओं और सेवाओं का बहिष्कार कर दे, तो ब्रिटिश शासन की नींव स्वतः कमजोर हो जाएगी।

बिहार में असहयोग आंदोलन को अभूतपूर्व जनसमर्थन प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों ने सरकारी विद्यालयों और महाविद्यालयों का बहिष्कार कर राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों में प्रवेश लिया। वकीलों ने अंग्रेजी अदालतों में कार्य करना छोड़ दिया और अनेक सरकारी कर्मचारियों ने भी आंदोलन के प्रति सहानुभूति व्यक्त की। विदेशी कपड़ों और वस्तुओं का सार्वजनिक बहिष्कार किया गया तथा खादी और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का व्यापक अभियान चलाया गया।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद, मजहरुल हक, ब्रजकिशोर प्रसाद तथा अनुग्रह नारायण सिंह जैसे नेताओं ने बिहार में आंदोलन को संगठित और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके नेतृत्व में गाँवों और कस्बों तक राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ।[7]

असहयोग आंदोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि इसने स्वतंत्रता संघर्ष को शिक्षित वर्ग तक सीमित न रखकर किसानों, मजदूरों, महिलाओं और युवाओं तक पहुँचाया। पहली बार बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोगों ने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की। इस आंदोलन ने जनसाधारण में राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

किया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य को जन-जन तक पहुँचाया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन और बिहार:

सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारंभ वर्ष 1930 में महात्मा गांधी द्वारा दांडी यात्रा और नमक सत्याग्रह के साथ हुआ। इस आंदोलन का उद्देश्य अन्यायपूर्ण औपनिवेशिक कानूनों का शांतिपूर्ण उल्लंघन करके ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करना था। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में जनसहभागिता और राजनीतिक सक्रियता का एक नया अध्याय लेकर आया।

बिहार में इस आंदोलन को व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ। लोगों ने नमक कानून तोड़ने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, करों के विरोध तथा सरकारी नीतियों के विरुद्ध प्रदर्शन करने में सक्रिय भागीदारी निभाई। अनेक स्थानों पर सभाएँ, जुलूस और सत्याग्रह आयोजित किए गए। महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में आंदोलन में भाग लिया और राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों ने जमींदारों और औपनिवेशिक प्रशासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध किया। किसान सभाओं और जनसंगठनों के माध्यम से किसानों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया गया। इस आंदोलन ने बिहार में राजनीतिक भागीदारी की भावना को मजबूत किया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति की मांग को और अधिक व्यापक एवं सशक्त बनाया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान अनेक नेताओं और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया, किंतु इससे जनता का उत्साह कम नहीं हुआ। बल्कि दमनात्मक नीतियों ने लोगों में स्वतंत्रता के प्रति और अधिक प्रतिबद्धता उत्पन्न की। इस आंदोलन ने बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन के संगठनात्मक ढाँचे को मजबूत किया तथा जनता को लोकतांत्रिक संघर्ष के लिए तैयार किया।

भारत छोड़ो आंदोलन और बिहार:

वर्ष 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सबसे व्यापक, प्रभावशाली और निर्णायक जनआंदोलन माना जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार की नीतियों तथा भारतीयों की उपेक्षा के विरुद्ध गांधीजी ने "करो या मरो" का ऐतिहासिक आह्वान किया। इस आह्वान ने पूरे देश में स्वतंत्रता के लिए अभूतपूर्व जनजागरण उत्पन्न किया।

बिहार इस आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा। आंदोलन के प्रारंभ होते ही अनेक राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, किंतु जनता ने संघर्ष जारी रखा। पटना सचिवालय पर तिरंगा फहराने का प्रयास, सरकारी भवनों के सामने प्रदर्शन, संचार व्यवस्था को बाधित करने की गतिविधियाँ तथा भूमिगत संगठनों का गठन इस आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ थीं।

जयप्रकाश नारायण, रामानंद मिश्र, योगेंद्र शुक्ल तथा अन्य समाजवादी नेताओं ने भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व किया। हजारीबाग केंद्रीय कारागार से जयप्रकाश नारायण के साहसिक पलायन ने आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की। बिहार के अनेक जिलों—पटना, सारण, शाहाबाद, मुजफ्फरपुर, भागलपुर और गया—में जनता ने अंग्रेजी प्रशासन को खुली चुनौती दी।[8]

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

भारत छोड़ो आंदोलन ने बिहार में राष्ट्रवाद की भावना को चरम पर पहुँचा दिया। इस आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय जनता अब किसी भी परिस्थिति में औपनिवेशिक शासन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी। ब्रिटिश शासन की प्रशासनिक और नैतिक वैधता पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा और अंततः स्वतंत्रता की प्रक्रिया को गति मिली।

बिहार पर राष्ट्रीय आंदोलन का सामाजिक प्रभाव:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने बिहार के सामाजिक जीवन में व्यापक और दूरगामी परिवर्तन उत्पन्न किए। इस आंदोलन ने समाज के विभिन्न वर्गों को एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य से जोड़ने का कार्य किया। जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय विभाजनों से ऊपर उठकर लोगों ने राष्ट्रीय एकता और सामूहिक संघर्ष की भावना को अपनाया।

महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। वे सभाओं, जुलूसों, सत्याग्रहों और बहिष्कार आंदोलनों में सक्रिय रूप से शामिल हुईं। इससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ तथा उनके अधिकारों और शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी।

राष्ट्रीय आंदोलन ने शिक्षा के प्रसार को भी प्रोत्साहित किया। राष्ट्रीय विद्यालयों और शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई तथा युवाओं में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त अस्पृश्यता, सामाजिक भेदभाव और रूढ़िवादिता जैसी समस्याओं के विरुद्ध भी जागरूकता उत्पन्न हुई। सामाजिक समानता, मानवाधिकार और लोकतांत्रिक मूल्यों को व्यापक स्वीकृति मिलने लगी।

आर्थिक प्रभाव:

राष्ट्रीय आंदोलन का बिहार की आर्थिक संरचना पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। स्वदेशी आंदोलन और गांधीवादी विचारधारा ने आत्मनिर्भरता तथा स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित किया। खादी, चरखा, कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प को बढ़ावा मिला, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्राप्त हुई।

किसानों में अपने आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी। स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में किसान आंदोलनों ने किसानों को संगठित किया और जमींदारी शोषण के विरुद्ध संघर्ष को गति प्रदान की। किसान सभा आंदोलन ने बिहार के ग्रामीण समाज में नई राजनीतिक चेतना उत्पन्न की।

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से भूमि सुधार, कृषि विकास और ग्रामीण उत्थान की मांगें मजबूत हुईं। स्वतंत्रता के बाद जमींदारी उन्मूलन और भूमि सुधार संबंधी नीतियों के निर्माण में इसी जागरूकता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन ने बिहार के आर्थिक पुनर्गठन की आधारशिला तैयार की।

राजनीतिक प्रभाव:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने बिहार में लोकतांत्रिक राजनीतिक संस्कृति के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस आंदोलन ने जनता को राजनीतिक अधिकारों, प्रतिनिधित्व और जनभागीदारी के महत्व से परिचित कराया। राजनीतिक दलों, किसान संगठनों, छात्र आंदोलनों और सामाजिक संस्थाओं का विकास इसी दौर में हुआ।

राष्ट्रीय आंदोलन ने बिहार में नेतृत्व की एक सशक्त परंपरा विकसित की। डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, डॉ.

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

अनुग्रह नारायण सिंह, मजहरुल हक, स्वामी सहजानंद सरस्वती तथा जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने न केवल बिहार बल्कि राष्ट्रीय राजनीति को भी दिशा प्रदान की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने, जबकि डॉ. श्रीकृष्ण सिंह बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री बने। लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय और जनकल्याण जैसे मूल्यों की स्थापना में राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आज भी बिहार की राजनीतिक संस्कृति और लोकतांत्रिक परंपराओं में राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का अध्ययन केवल एक राजनीतिक आंदोलन के रूप में नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे भारतीय समाज में हुए व्यापक सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास की प्रक्रिया के रूप में भी समझना आवश्यक है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह आंदोलन भारतीय समाज को परंपरागत संरचनाओं से निकालकर आधुनिकता, लोकतंत्र, समानता और राष्ट्रवाद की दिशा में ले जाने वाला एक महत्वपूर्ण माध्यम था। इस आंदोलन ने सामाजिक संबंधों, राजनीतिक व्यवहारों, सामूहिक पहचान और जनसहभागिता की प्रकृति को गहराई से प्रभावित किया।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से पूर्व भारतीय समाज जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा के आधार पर अनेक स्तरों में विभाजित था। औपनिवेशिक शासन ने इन विभाजनों का लाभ उठाकर अपनी सत्ता को मजबूत बनाए रखा। किंतु राष्ट्रीय आंदोलन ने इन विविधताओं के बीच एक साझा राष्ट्रीय पहचान विकसित करने का प्रयास किया। स्वतंत्रता, स्वराज और राष्ट्रहित जैसे विचारों ने विभिन्न सामाजिक समूहों को एक मंच पर लाने का कार्य किया। इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

संघर्ष सिद्धांत (Conflict Theory) के अनुसार समाज विभिन्न वर्गों और शक्तियों के बीच संघर्ष का परिणाम होता है। कार्ल मार्क्स के विचारों के आलोक में देखा जाए तो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन औपनिवेशिक सत्ता और भारतीय जनता के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक हितों के संघर्ष का परिणाम था। ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियों ने किसानों, मजदूरों, व्यापारियों और शिक्षित मध्यम वर्ग को प्रभावित किया, जिसके कारण व्यापक असंतोष उत्पन्न हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन इसी असंतोष की संगठित अभिव्यक्ति था। बिहार में चंपारण सत्याग्रह, किसान आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन इस संघर्ष की स्पष्ट अभिव्यक्तियाँ थीं, जहाँ जनता ने औपनिवेशिक व्यवस्था के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध किया।

दूसरी ओर **संरचनात्मक-कार्यात्मक सिद्धांत (Structural Functionalism)** के अनुसार समाज विभिन्न संस्थाओं और समूहों से मिलकर बना एक संगठित तंत्र है, जहाँ प्रत्येक संस्था सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में योगदान देती है। इस दृष्टिकोण से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने समाज को एकीकृत करने का कार्य किया। राष्ट्रीय आंदोलन ने विभिन्न जातियों, वर्गों, धार्मिक समुदायों और क्षेत्रों के लोगों को एक साझा उद्देश्य—स्वतंत्रता—से जोड़ दिया। इसने राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत किया।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

प्रतीकात्मक अंत:क्रियावाद (Symbolic Interactionism) के दृष्टिकोण से भी राष्ट्रीय आंदोलन का विशेष महत्व है। राष्ट्रध्वज, खादी, चरखा, वंदे मातरम्, सत्याग्रह और स्वदेशी जैसे प्रतीक केवल राजनीतिक साधन नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्रीय पहचान और सामूहिक चेतना के शक्तिशाली प्रतीक बन गए। इन प्रतीकों ने लोगों में राष्ट्रीय गौरव, आत्मसम्मान और एकता की भावना विकसित की। बिहार में खादी आंदोलन, चरखा अभियान और राष्ट्रीय सभाओं के माध्यम से इन प्रतीकों का व्यापक प्रसार हुआ।

बिहार के संदर्भ में राष्ट्रीय आंदोलन ने सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) को बढ़ावा दिया। पहले जो वर्ग राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं से दूर थे, वे धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवन में सक्रिय होने लगे। किसानों, महिलाओं, छात्रों तथा पिछड़े वर्गों की भागीदारी ने सामाजिक संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया को गति दी। राष्ट्रीय आंदोलन ने सामाजिक न्याय, समानता और नागरिक अधिकारों की अवधारणा को जनसामान्य तक पहुँचाया।

महिलाओं की भागीदारी इस परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पक्ष थी। राष्ट्रीय आंदोलन से पूर्व महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भूमिका सीमित थी, किंतु स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान उन्होंने सभाओं, जुलूसों, बहिष्कार आंदोलनों और सामाजिक सुधार अभियानों में सक्रिय भागीदारी निभाई। इससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ तथा उनके अधिकारों के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ी।

किसान आंदोलनों ने भी बिहार के सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में किसान संगठनों ने ग्रामीण समाज में नई चेतना का संचार किया। किसानों ने अपने अधिकारों, भूमि संबंधी समस्याओं और सामाजिक सम्मान के लिए संगठित संघर्ष करना सीखा। इससे ग्रामीण समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों और राजनीतिक सहभागिता का विकास हुआ।

इस प्रकार समाजशास्त्रीय दृष्टि से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का साधन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक पुनर्निर्माण, राष्ट्रीय एकीकरण, लोकतांत्रिक विकास और सामाजिक परिवर्तन की एक व्यापक प्रक्रिया थी। बिहार में इसके प्रभाव विशेष रूप से दिखाई देते हैं, जहाँ इस आंदोलन ने सामाजिक चेतना, राजनीतिक जागरूकता और जनसंगठन की परंपरा को सुदृढ़ किया।

निष्कर्ष:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन आधुनिक भारत के निर्माण की आधारशिला था। यह आंदोलन केवल विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त करने का संघर्ष नहीं था, बल्कि भारतीय समाज को नई दिशा देने वाला एक व्यापक राष्ट्रीय जागरण भी था। इस आंदोलन ने स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों को स्थापित किया तथा भारतीय जनता को एक साझा राष्ट्रीय पहचान प्रदान की।

बिहार ने इस महान आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक योगदान दिया। चंपारण सत्याग्रह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक बिहार राष्ट्रीय संघर्ष का एक प्रमुख केंद्र बना रहा। चंपारण सत्याग्रह ने महात्मा गांधी को राष्ट्रीय नेतृत्व प्रदान किया तथा किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय विमर्श का विषय बनाया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-6 | July – August 2026

बिहार की सक्रिय भागीदारी ने स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा, व्यापक जनाधार और संगठनात्मक शक्ति प्रदान की।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह, मजहरुल हक, स्वामी सहजानंद सरस्वती तथा जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने बिहार ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के राजनीतिक और सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान की। इनके नेतृत्व ने स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत बनाने के साथ-साथ स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से बिहार में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ, किसानों और श्रमिकों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी, महिलाओं की सामाजिक भागीदारी में वृद्धि हुई तथा शिक्षा और सामाजिक सुधार आंदोलनों को नई गति मिली। इसके अतिरिक्त लोकतांत्रिक मूल्यों, जनसहभागिता और सामाजिक न्याय की अवधारणाओं को भी व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई। स्वतंत्रता के पश्चात भूमि सुधार, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं पर भी राष्ट्रीय आंदोलन की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से राष्ट्रीय आंदोलन ने बिहार में सामाजिक संरचना, राजनीतिक संस्कृति और सामूहिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया। इसने परंपरागत सामाजिक बंधनों को चुनौती दी और आधुनिक लोकतांत्रिक समाज की नींव को मजबूत किया। आज भी बिहार की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था में राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और बिहार के संबंधों का अध्ययन केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिहार का योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का एक गौरवपूर्ण अध्याय है, जिसने राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को सशक्त बनाने में अमूल्य भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची:

1. चंद्र, बिपन. **भारत का स्वतंत्रता संघर्ष**. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, 2018, पृ. 45–68, 112–135, 245–270।
2. मजूमदार, आर. सी. **भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास (भाग–2)**. कोलकाता: फर्मा के.एल.एम. प्राइवेट लिमिटेड, 1963, पृ. 125–148, 201–225।
3. ताराचंद. **भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास (भाग–3)**. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1972, पृ. 85–110, 176–198।
4. सीतारमैया, बी. पट्टाभि. **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास**. मुंबई: पद्मा प्रकाशन, 1946, पृ. 302–340।
5. सरकार, सुमित. **आधुनिक भारत (1885–1947)**. नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया, 2014, पृ. 95–118, 167–190, 321–345।
6. त्रिपाठी, अमलेश. **भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास**. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2016, पृ. 156–182, 210–238।
7. गांधी, मोहनदास करमचंद. **सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा**. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मंदिर, 2019, पृ. 392–421।
8. प्रसाद, डॉ. राजेंद्र. **आत्मकथा**. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2018, पृ. 178–205।